समस्याओं के मूल कारणों की जाच कर होगा निराकरण

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

जबलपुर ■ राज न्यूज नेटवर्क

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान टीएफआरआई द्वारा आयोजित राज्य आरईडीडी प्लस कार्य योजनाओं विकसित करने हेतु मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र वन विभागों की क्षमता विकास पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का बुधवार को समापन हुआ। कार्यशाला में मौजूद अधिकारियों ने विचार मंथन के बाद, अधिकारियों ने समस्या के मूल कारणों की जांच एवं निकाकरण हेतु पैकेज विकसित करने की बात कही।

कार्यशाला में दोनों राज्यों के 23 आईएफएस और अन्य वन्य अधिकारियों ने विभिन्न अभ्यासों और गतिविधियों द्वारा राज्य आरईडीडी प्लस योजना को विकसित करने के लिए, वनों की कटाई, वन क्षरण के विभिन्न कारणों और कार्बन वृद्धि के लिए बाधाओं की पहचान की। प्रशिक्षण में वनों की कटाई और वन क्षरण के मुख्य चालक की पहचान क्रमशः वन भूमि में अतिक्रमण और चराई के रूप में की गई थी। कार्बन वृद्धि के प्रमुख बाधाओं के रूप में वनों के बाहर के पेड़ एवं वृक्षारोपण और मिट्टी एवं नमी संरक्षण कार्यों की पहचान की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के परिणामों का उपयोग जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने हेतु वनों के कार्बन स्टॉक में वृद्धि, वनों की कटाई और वन क्षरण से उत्सर्जन को कम करने के लिए मप्र और महाराष्ट्र राज्य आरईडीडी प्लस कार्य योजनाओं में किया जायेगा।

नईदुनिया
जबलपुर, गुरुवार 28 अक्टूबर 2021

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में काम आएगा प्रशिक्षण

प्रशिक्षण में शामिल मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के वन विभाग के अधिकारी। ● सौजन्य

जबलपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, टीएफआरआइ द्वारा आरईडीडी-प्लस योजना विकसित करने के लिए मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र वन विभागों की क्षमता विकास पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का बुधवार को समापन हो गया। कार्यक्रम के दौरान दोनों राज्यों के 23 आइएफएस और अन्य वन अधिकारियों ने विभिन्न अभ्यासों व गतिविधियों द्वारा कार्य योजना को विकसित करने के लिए, वनों की कटाई, वन क्षरण के विभिन्न कारणों व कार्बन वृद्धि के लिए बाधाओं की पहचान की। प्रशिक्षण में वनों की कटाई, व वन क्षरण के लिए मुख्य चालक की पहचान क्रमशः वन भूमि में अतिक्रमण व चराई के रूप में की गई। कार्बन वृद्धि के लिए प्रमुख बाधाओं के रूप में वनों के बाहर के पेड़ व वृक्षारोपण व मिट्टी में नमी संरक्षण कार्य की पहचान की जांच व निवारण के लिए पैकेज विकसित किए जा सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम के परिणाम का उपयोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए वनों के कार्बन स्टाक में वृद्धि, वनों की कटाई व वन क्षरण से उत्सर्जन को कम करने के लिए मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र राज्य कार्य योजनाओं में किया जाएगा।

मिट्टी में नमी की कमी से घट रहा कार्बन, सिमट रहे जंगल

टीएफआरआई की दो दिवसीय कार्यशाला का समापन

निज प्रतिनिधि | जबलपुर

वन भूमि में खेती के लिए होने वाली चराई, वृक्षों की कटाई के कारण मिट्टी में नमी कम होने के कारण कार्बन घटने से जंगल सिमट रहे हैं। ये निष्कर्ष टीएफआरआई के वैज्ञानिकों ने दो दिन के प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान निकाला है।

होटल कल्चुरी में आयोजित इस कार्यशाला का बुधवार को समापन हुआ। जिसमें मप्र और महाराष्ट्र के 23 आईएफएस व विभिन्न वनमंडलों से आए वन अधिकारी शामिल थे। प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने विभिन्न पहलुओं पर मंथन किया जिसमें वनक्षरण के विभिन्न कारण सामने आए। कार्बन की कमी के संबंध में कहा गया कि लगातार वनों की कटाई के साथ वन भूमि पर की जाने वाली खेती से मिट्टी की ताकत और नमी कम होने से कार्बन लगातार घट रही है। इसकी रोकथाम के लिए जंगलों के बाहर लगातार वृक्षारोपण और सिंचाई के साधन बढ़ाने की कार्ययोजना पर तेजी से काम किया जाएगा। प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों का कहना है कि विशेषज्ञों द्वारा सिखाए गए आधुनिक तरीकों से निश्चित ही शोध में सहायता मिलेगा। कार्यशाला में टीएफआरआई निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव, वरिष्ठ अधिकारी अमिताभ अग्निहोत्री, के रमन, विभाष कुमार ठाकुर, एम. श्रीनिवासराव तथा संस्था में कार्यरत वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए।